संस्मरण की परिभाषा—

संस्मरण हिंदी गद्य की आधुनिकतम विद्या है। जीवनी परक साहित्य का यह अत्यन्त ललित एवं लघु कलात्मक अंग है। जीवन अभिव्यक्ति का यह रूप स्मरण पर आधारित है। कुछ विद्वानों की राय मे इसका आगमान परिचय से हुआ है, किन्तु बात ऐसी नहीं है। हमारे यहाँ इसका बीज रूप बहुत पहले से मिलता है। भारतीय काव्यशास्त्र में संस्मरण अलंकार रूप में चिरकाल से प्रयुक्त होता रहा है।

नरेन्द्र मोहन के संस्मरणों का अध्ययन - विश्लेषण करने से पूर्व संस्मरण शब्द पर विचार किया जाना चाहिए। मानक हिंदी कोश में संस्मरण शब्द का अर्थ दिया हैं "संस्मरण शब्द सम्-समृ-ल्युट (अण) से उत्पन्न हुआ है जिसका अर्थ है - भली प्रकार से स्मृति।" इस तरह स्मृति करने के कार्य के फल को संस्मरण कहते हैं। इसी तरह हिंदी विश्व कोश में कहा है "सं-स्मृ-ल्युट। जिसका अर्थ दिया है - पूर्ण स्मरण, खूब याद, अच्छी तरह से नाम लेना या सुमरिन। दूसरा अर्थ-संस्कार जन्यज्ञान।" 'संस्मरण' के लिए दो अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग होता है एक मेमायर (memoir) तथा दूसरा रेमिनिसेंसेज (Reminisenses)। संस्मरण साहित्य विधा पाश्चात्य साहित्य के प्रभाव से भारतीय साहित्य मे रुढ हुई है। दोनों मे सूक्ष्म भेद है - "मेंमायर अपेक्षाकृत अधिक वस्तुपरक संस्मरण होते हैं। जिनमें घटनाओं का अधिकाधिक विवरण होता है हिंदी में इन दिनों मेंमायर के लिए संस्मरण शब्द ही पर्यायी बना हुआ हैं। संस्मरण का अर्थ है - सम्यक स्मरण। रेमिनिसेंसेज लेखक के व्यक्तित्त्व एवं व्यक्तिगत जीवन की अनुभूतियों को कहीं अधिक स्पष्ट रूप में व्यक्त करता है।

इस विधा को विभिन्न विद्वानों ने विभिन्न प्रकार से परिभाषित किया है—

1. डॉ. जगदीश गुप्त ने संस्मरण की व्याख्या इस तरह से की हैं - "जो तरंगा घात मन अपना अमिट प्रभाव छोड़ जाते हैं, वही संस्मरण बन जाते हैं। तरंगाघात प्रकृति से अमिट दृश्यों के हो सकते हैं, या सर्पक में आये हुए उन महामनों से जो सामान्य व्यक्ति तक किसी के भी हो सकते हैं । फिर वे संस्मरण हुआ करते हैं।

2. डॉ. चंद्रभानु सोनवणे - "संस्मरण भाषा के माध्यम द्वारा अतीत घटना, व्यक्ति आदि में किसी एक की संवेदनामय संस्मरण से युक्त अभिव्यक्ति की जाती है।"

3. डॉ. गोंविद त्रिगुणायत - संस्मरण में व्यक्तित्त्व को अधिक महत्त्व देते हुए उनका कथन है "भावुक कलाकार जब अतीत की अनन्त स्मृतियों में से कुछ रमणीय अनुभूतियों को अपनी कोमल कल्पना से अनुरजित कर व्यंजनामूलक संकते शैली में अपने व्यक्तित्त्व की विशिष्टताओं से विशिष्ट बनाकर रोचक ढंग से यथार्थ रूप में व्यक्त करता है, तब उसे संस्मरण कहते हैं।

4. महादेवी वर्मा 'अतीत के चलचित्र' में एक स्थल पर वे लिखती है "शैशव की स्मृतियों में एक विचित्रता है। जब हमारी भाव प्रवणता गंभीर और प्रशांत होती है, तब अतीत की रेखायें कुहरे में से स्पष्ट होती हुई वस्तुओं के समान अनायास ही स्पष्ट से स्पष्टतर होने लगती है।

5. श्री राजेन्द्र अवस्थी के अनुसार - "संस्मरण एक समूचा जीवन दर्शन है। वह व्यक्ति के समूचे व्यक्तित्त्व को भी प्रभावित करता है, तो उसके एक छोटे से अंग को भी। संस्मरण एक बहुत व्यापक श्रेणी है, क्योंकि इसमें व्यक्ति से लेकर स्थान, काल तक का समावेश होता है।"

6. अमृता प्रितम के अनुसार - "हम जो कुछ भी लिखते है वह अप्रत्यक्ष रूप से संस्मरण ही है क्योंकि हम जो भी कहानी लिखते हैं वह अप्रत्यक्ष संस्मरण ही है।"

उपर्युक्त परिभाषाओं के आधार पर हम कह सकते हैं कि संस्मरण में 'स्मृति' मूल तत्त्व है। व्यतीत होते ही सब कुछ स्मृति का अंग बन जाता है और दृष्टि कहीं से उपलब्ध होती है।

संस्मरण के स्वरूप एवं विशेषताएँ—

उपर्युक्त आधारों पर संस्मरण के स्वरूप एवं विशेषताओं के संबंध में कहा जा सकता है कि—

1. संस्मरण अपने संपर्क में आये किसी विषय, व्यक्ति या प्राणी विशेष का स्मृत्यांकन है।

2. संस्मरण किसी सत्य घटना पर आधारित एक चरित्र-व्यंजक लेख है।

3. संस्मरण में वर्ण्य-वस्तु, व्यक्ति आदि के अतिरिक्त लेखक का व्यक्तित्व भी समाहित एवं अभिव्यक्ति होता है।

4. संस्मरण लेखक के भोगे हुए, अनुभूत एवं किसी दृश्यात्मक पहलू का शब्दांकन के माध्यम से एक सजीव दस्तावेज है।

5. संस्मरण लेखक की संवेदना, अनुभूति एवं रागात्मकता की अभिव्यक्ति का परिणाम है। व्यक्ति, वस्तु इत्यादि के प्रति लेखक का रागात्मक लगाव, उसकी अनुभूतियाँ और संवेदनाएँ ही संस्मरण को जन्म देती हैं।

6. संस्मरण किसी व्यक्ति, वस्तु, प्राणी इत्यादि के प्रति चित्रोपम एक कथात्मक आख्यान है। संस्मरण पढ़ते ही आँखों के सामने अनायास विवेच्य विषय की जीती-जागती तस्वीर साकार हो उठती है। संस्मरण में कथात्मकता का तत्त्व कूट - कूट कर विद्यमान होता है। संस्मरण का ताना - बाना सत्यकथा पर बुना जाता है।

7. ऐतिहासिकता का पुट, जीवन के किसी खंड विशेष की अभिव्यक्ति कोमल कल्पना, वैयक्तिकता, विश्वसनीयता, व्यंजनापूर्ण सांकेतिक शैली इत्यादि संस्मरण की कुछ अन्य ऐसी विशेषताएँ हैं, जिनके आधार पर संस्मरणकार किसी व्यक्ति विशेष या प्राणी-विशेष की जीवन-नौका को खेता है और घीसा, अलोपी, बिन्दा, रामा, सबिया, बिट्टो सरीखे साधारण से साधारण पात्रों की अमर सृष्टि के रूप में संस्मरण का सृजन कर डालता है।

संस्मरण के तत्व

गद्य की नव-विकसित विधा है। इस शब्द का शाब्दिक अर्थ है-भली प्रकार से स्मरण। संस्मरण अतीत को सजीव करते हैं। संस्मरण के तत्व निम्नलिखित माने गए हैं—

1. अतीत की स्मृति— यह केवल अतीत की घटनाओं पर आधारित है।

2. आत्मीय एवं गहन अंतरंग संबंध— बिना आत्मीय और गहरे अन्तरंग संबंध के लेखक किसी स्मृति को प्रभावी ढंग से स्थापित नहीं कर पाएगा।

3. प्रामाणिकता— यह कल्पनाओं पर आधारित नहीं हो सकती, अतः इसका तथ्यों/प्रमाणों पर आधारित होना जरुरी है।

4. वैयक्तिकता— संस्मरण वैयक्तिक ही होते हैं। इसमें लेखक वह सब लिखता है जो वह देखता, अनुभव करता है और उसे भुला नहीं पाता है।

5. जीवन के किसी खंड विशेष का चित्रण— इसमें संपूर्ण जीवन के चित्रण के स्थान पर कुछ विशेष घटनाओं का ही वर्णन होता है।

6. चित्रोपमता— इसमें विषयगत चरित्र का विवेचन इस ढंग से किया जाता है कि उसका स्वरूप शब्दों से उभर कर चित्र के समान पाठक के सामने आ जाए।

7. कथात्मकता— यह एक कथात्मक साहित्य-विधा है जो काल्पनिक न होकर सत्य पर आधारित होती है।

8. तटस्थता— तटस्थता संस्मरण की अनिवार्य शर्त है। (प्रमुख संस्मरण लेखक - आचार्य पद्मसिंह शर्मा, बनारसी दास चतुर्वेदी, आचार्य शिवपूजन सहाय, रामवृक्ष बेनीपुरी, कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर, विष्णु प्रभाकर आदि)